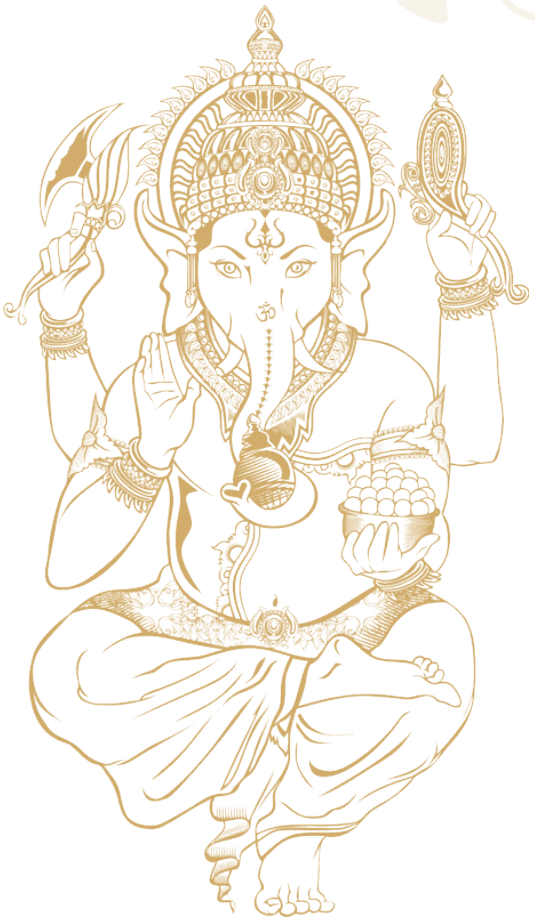

T

S

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120951510

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
18-19/02/1998	जन्म तिथि	24/05/1998
बुध-गुरुवार	दिन	रविवार
घंटे 03:15:00	जन्म समय	09:07:00 घंटे
घटी 50:43:45	जन्म समय(घटी)	09:11:42 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:57:29	सूर्योदय	05:26:19
18:13:46	सूर्यास्त	19:09:52
23:49:47	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:56

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह		राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 6वर्ष 5मा 30दि		04:43:13	धनु	लग्न		मिथु	29:40:27	शुक्र 16वर्ष 3मा 14दि	
बुध		06:12:19	कुंभ	सूर्य		वृष	08:57:15	चन्द्र	
20/08/2023		27:55:01	तुला	चंद्र		मेष	15:48:28	06/09/2020	
20/08/2040		25:26:26	कुंभ	मंगल		वृष	06:09:55	06/09/2030	
बुध	16/01/2026	03:25:18	कुंभ	बुध		मेष	20:34:38	चन्द्र	07/07/2021
केतु	13/01/2027	09:37:39	कुंभ	गुरु		कुंभ	29:43:46	मंगल	05/02/2022
शुक्र	13/11/2029	27:45:06	धनु	शुक्र		मीन	29:24:19	राहु	07/08/2023
सूर्य	20/09/2030	23:12:34	मीन	शनि		मेष	04:28:02	गुरु	06/12/2024
चन्द्र	19/02/2032	16:45:45	सिंह	राहु	व	सिंह	12:36:28	शनि	07/07/2026
मंगल	15/02/2033	16:45:45	कुंभ	केतु	व	कुंभ	12:36:28	बुध	07/12/2027
राहु	05/09/2035	16:05:18	मक	हर्ष	व	मक	18:53:36	केतु	07/07/2028
गुरु	10/12/2037	06:55:19	मक	नेप	व	मक	08:13:40	शुक्र	08/03/2030
शनि	20/08/2040	14:06:50	वृश्चि	प्लूटो	व	वृश्चि	12:58:25	सूर्य	06/09/2030

लग्न-चलित

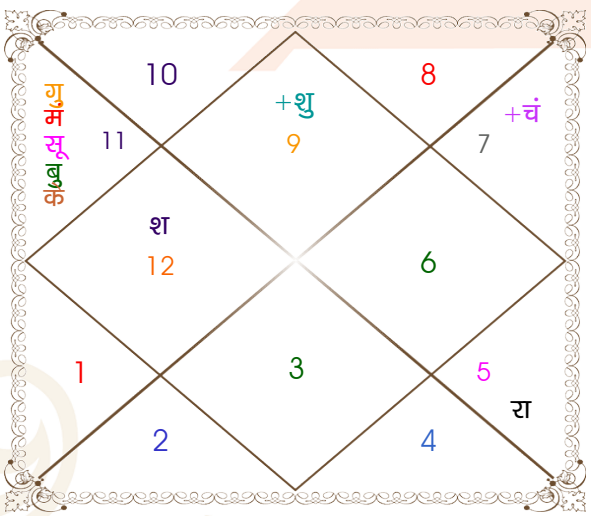

लग्न-चलित

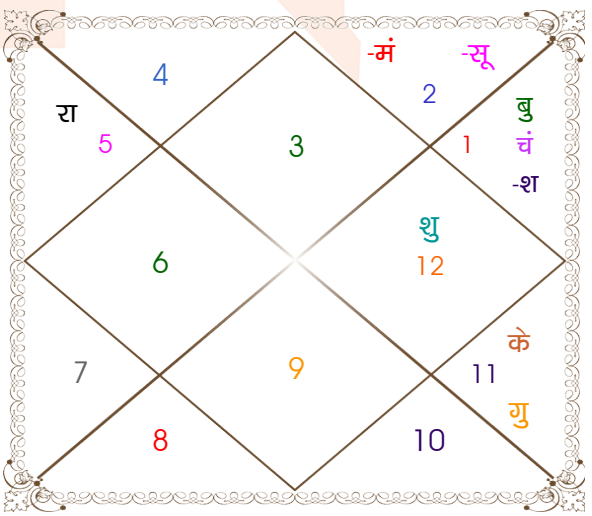

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	गज	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	मंगल	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	तुला	मेष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.50		

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

ज का वर्ग सर्प है तथा ै का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ज और ै का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

ज मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

ै मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल ै कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल ज कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ज तथौ में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।